भारत में खेती के लिए गेहूं की 14 और जौ की 1 नई किस्म की पहचान की गई

भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान (आई आई डब्ल्यू बी आर), करनाल के सहयोग से महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान) द्वारा 28 से 30 अगस्त, 2023, को आयोजित 62वीं अखिल भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधानकर्ताओं की कार्यशाला के दौरान गेहूं की 14 नई किस्मों और जौ एक किस्म की खेती के लिए पहचान की गई।

इसके अलावा, गेहूं की एक किस्म के बुवाई क्षेत्र को बढ़ाने की सिफ़ारिश भी की गई। बैठक में देश के विभिन्न हिस्सों से गेहूं और जौ की फसल पर काम करने वाले शोधकर्ताओं ने हिस्सा लिया।

गेहूं की नई किस्में

एच डी 3386: सिंचित, समय पर बुवाई की परिस्थितियों के लिए

डब्ल्यू एच 1402: सीमित सिंचाई, समय पर बुवाई की परिस्थितियों के लिए

भारत के उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्रों (एन डब्ल्यू पी ज़ेड), जिसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर मंडलों को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी मंडल को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के जम्मू और कठुआ ज़िले, हिमाचल प्रदेश का उना ज़िला और सिरमौर ज़िला की पांवटा घाटी और उत्तराखंड का तराई क्षेत्र शामिल हैं, में बुवाई के लिए।

एच डी 3388: सिंचित, समय पर बुवाई की परिस्थितियों के लिए

भारत के पूर्वोत्तर मैदानी क्षेत्रों (एन ई पी ज़ेड), जिसमें पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम और पूर्वोत्तर राज्यों के मैदान शामिल हैं, में बुवाई के लिए।

एन डब्लयू एस 2194 व जी डब्लयू 547: सिंचित, समय पर बुवाई की परिस्थितियों के लिए

सी जी 1040, डी बी डब्ल्यू 359 और डी बी डब्ल्यू 377: अगेती बुवाई वाली उच्च उर्वरता की परिस्थितियों के लिए

भारत के मध्य क्षेत्र (सी ज़ेड), जिसमें मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात व राजस्थान शामिल हैं, में बुवाई के लिए

एम पी 1378: सिंचित, समय पर बुवाई की परिस्थितियों के लिए

डी बी डब्ल्यू 359, एन आई ए डब्ल्यू 4028, यू ए एस 478, एच आई 8840 और एच आई 1665: सीमित सिंचाई, समय पर बुवाई की परिस्थितियों के लिए

प्रायद्वीपीय क्षेत्र (सी ज़ेड) के लिए, जिसमें महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु के मैदानी इलाके शामिल हैं, में बुवाई के लिए।

बुवाई क्षेत्र के विस्तार के लिए

डी बी डब्ल्यू 327: अगेती बुवाई वाली उच्च उर्वरता की परिस्थितियों में **भारत के मध्य क्षेत्र (सी ज़ेड)** में बुवाई क्षेत्र के विस्तार के लिए।

जौ की नई किस्म

डी डब्लयू आर बी 2019: सिंचित, समय पर बुवाई की परिस्थितियों के लिए

भारत के उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्रों (एन डब्ल्यू पी ज़ेड), जिसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर मंडलों को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी मंडल को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के जम्मू और कठुआ ज़िले, हिमाचल प्रदेश का उना ज़िला और सिरमौर ज़िला की पांवटा घाटी और उत्तराखंड का तराई क्षेत्र शामिल हैं, में बुवाई के लिए।